आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:19-08-14

ज्ञान सागर बाप ने अपने विशाल ज्ञान के भंडार को दो शब्दों में समाते हुए कहा, मीठे बच्चे - बड़ा बाबा तुम बच्चों से ज्यादा मेहनत नहीं कराते, सिर्फ दो अक्षर याद करो अल्फ और बे, इस में सारा ज्ञान समाया हुआ है.

कैसे?

बाबा ने हमें जो भी ज्ञान दिया है उसे दो पार्ट में बांट सकते है -

1. आत्मा और परमात्मा का ज्ञान -- जिसका मुख्य सार है, हम सब मनुष्य आत्माये है या कहे जीवात्माये है और हमारा पिता, परमात्मा है. हम सब आत्माये हमारे प्यारे पिता के साथ परमधाम में रहते है और वहॉ से नम्बरवार पार्ट बजाने नीचे इस सृष्टि रुपी ड्रामा के स्टेज पर आते है. पार्ट बजाते-बजाते हम आत्माये सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाते है और अपने आप को यानी "मैं आत्मा हूँ," यह भूल जाते है. तब हमारे प्यारे पिता परमधाम से आकर हमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान देते है और कहते है, "हे आत्मा, अब मुझे (परमात्मा को) याद करो तो तुम वापस सतोप्रधान बन जायेंगे." इसी बात को बाबा ने आज एक शब्द में हमें समझाया - अल्फ़. अल्फ का मतलब होता है परमात्मा और उसे याद करने से हम आत्माये वापस पावन बन जायेंगी.

2. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान -- जिसका मुख्य सार हैं, इस सृष्टि का चक्र, चार मुख्य भागों में बटा हैं - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग. हम सब मनुष्य आत्माये, इस सृष्टि चक्र में, अपने-अपने समय पर पार्ट बजाने परमधाम से नीचे आते है. इस सृष्टि चक्र में हम आत्माये ज्यादा से ज्यादा, 84 जन्म और कम से कम 1 जन्म लेती है. सब आत्माओं को शुरू में सतोप्रधान, बाद में सतो, रजोप्रधान, रजो, तमो और तमोप्रधान के चक्र में से पसार होना पड़ता है. इस चक्र का आधा पार्ट या आधा कल्प, सतयुग और त्रेतायुग में, हम आत्माये आत्मा-अभिमानी हो कर और आधा पार्ट या दूसरा आधा कल्प, द्वापर और कलियुग में, हम आत्माये देह-अभिमानी हो कर पार्ट बजाते है. इस सृष्टि चक्र के आधा कल्प में, एक ही धर्म, जिसको आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है और बाकी आधा कल्प, तीन मुख्य धर्म - इस्लाम, बौद्ध और क्रिश्चन धर्म चलते है. हम देवी-देवता धर्म की आत्माये, आधा कल्प, देही-अभिमानी हो कर पार्ट बजाते हैं यानी हम खुद को आत्मा समझकर पार्ट बजाते हैं और हम मनुष्य आत्माये सब कर्मेन्दियॉ की नेचरल रुप से राजा होती है. जैसे की हम आत्माये बादशाह हैं और हमारी कर्मेन्द्रियॉ सब नेचरल रुप से कंट्रोल में रहती है. इसके कारण प्रकृति भी हमारी दासी हो कर पार्ट बजाती है. इस बात को बाबा ने एक शब्द में समझाते हुए कहा, "बे" यानी बादशाही को याद करो. इसे याद करने से हम आत्माये वापस स्वराज्य अधिकारी बन जाती है.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .